

संसदीय क्षेत्र कोटा के इटावा में ग्रामीण क्षेत्रों के लिए सुपोषित माँ अभियान के शुभारंभ कार्यक्रम में माननीय अध्यक्ष का संबोधन

इटावा क्षेत्र, एक कृषि प्रधान क्षेत्र है। इस क्षेत्र के दूर-दराज इलाके में अभी भी चिकित्सा सुविधाओं का अभाव है। उसके कारण हमारी माता-बहनों को बड़ी दिक्कत होती है। कई माता-बहनों को, गर्भवती होने के बाद, उसकी सम्पूर्ण जाँच न होने के कारण, कई बार जब बच्चा पैदा होता है, तो वह कुशल नहीं होता है या माँ का स्वास्थ्य कुशल नहीं होता है।

हम चाहते हैं कि जो सृष्टि की निर्माता है, जिसने हम सबको पैदा किया, इस योग्य बनाया, इसलिए हमारी जिम्मेदारी बनती है कि हम सब लोग मिलकर उनके लिए कुछ करें ताकि हमारी माता-बहनें स्वस्थ रहें। उसका होने वाला बच्चा, जो इस देश का भाग्य-निर्माता बनेगा, वह भी स्वस्थ रहे। इसीलिए सरकार ने कई योजनाएं शुरू की हैं। पोषण योजना है, जिसके माध्यम से आपको पोषण मिलता है। डिलीवरी होने के बाद या पहले कुछ सहयोग भी मिलता है। लेकिन पिछली बार, जब मैं कोटा में जे.के. लोन हॉस्पिटल गया था, तो मैंने देखा कि वहाँ कई शिशु पैदा होने के बाद इस सृष्टि में नहीं रहे थे। उस समय मैं कई माता-बहनों के घर पर गया। मैंने देखा कि उन माता-बहनों का वजन बहुत कम था। उनके घर पर पर्याप्त भोजन भी नहीं था। माँ हमेशा संवेदनशील होती है। घर में तीन बच्चे होते हैं, पति होता है, तो उसकी कोशिश रहती है कि सबसे पहले उसके बच्चों और पति को भरपूर भोजन मिल जाए, भले ही वह खुद भूखी रह जाए। इसलिए उसके पास जो कुछ भी होता है, वह सब कुछ उसकी समर्पण के संस्कार के कारण, खुद भूखे रहकर, वह अपने बच्चे और पति को भोजन दे देती है। मैंने यह पीड़ा गाँवों में भी देखी और शहरों में कई कच्ची बस्तियों में भी देखी है। मैंने एक और पीड़ा देखी है, जो हमेशा मेरे मन को विचलित करती है। मैंने

गांवों में देखा है कि हमारी माता-बहनें बच्चा पैदा होते ही, अपने बच्चे को छोटा-सा लकड़ी का झूला बनाकर या पेट पर अपनी साड़ी बाँधकर या कोई कपड़ा बाँधकर काम पर लग जाती हैं। वह जानती है कि अगर मैंने दो-तीन दिन मजदूरी नहीं की, तो शाम को मैं अपने बच्चे और पति का पेट कैसे भरूँगी। मैंने खेतों पर भी देखा है, बच्चा पालकी में या जमीन पर खेल रहा है और माता-बहनें खेत पर काम कर रही हैं। जबकि सामान्य रूप से, बच्चा पैदा होने के बाद कम से कम एक या दो महीने तक किसी महिला को काम नहीं करना चाहिए। लेकिन मजबूरी है। यदि वे काम नहीं करेंगी, तो शाम को घर का चूल्हा कैसे जलेगा? घर का चूल्हा जलाना है, बच्चों को पालना है, पति को भोजन कराना है। ये पीड़ा मैंने देखी है। जब मैंने यह देखा, तो सोचा कि समाज से इसके बारे में बात करते हैं। कुछ संस्थाओं से भी मैंने चर्चा की कि हम किस तरीके से हमारी गर्भवती महिलाओं को सुरक्षित कर सकते हैं, उसको स्वस्थ रख सकते हैं। हर गर्भवती महिला स्वस्थ रहे और उसका होने वाला बेटा या बेटी भी स्वस्थ रहे, यह हमारी जिम्मेदारी होनी चाहिए। इसलिए हमने तय किया कि एक माँ को सुपोषित और स्वस्थ रखने के लिए कम से कम नौ महीने और ग्यारह महीने उसको अच्छा भोजन मिले, पौष्टिक आहार मिले और नियमित रूप से नौ महीने तक उसकी जाँच हो। यदि उस जाँच में कोई कमी आती है, तो सप्लीमेंटरी दवा मिले और यदि खून की कमी हो, तो उसे खून भी चढ़ाया जाए।

यहाँ इतनी बड़ी संख्या में महिलाएं बैठी हैं, हर गांव में आप फैसला कर लें कि मेरे गांव में कोई भी गरीब महिला है या जिसके पास धन का अभाव है, हम उसका नाम लिख लें। उसका नाम लिखकर हमें बताएं कि यह गर्भवती महिला है, इसे ठीक से भोजन नहीं मिल रहा है। गर्भावस्था के दौरान नौ महीने और बच्चा पैदा होने के बाद दो महीने तक हम उसके घर तक भोजन पहुंचाएंगे ताकि वह स्वस्थ रहे। आज इस अभियान की शुरुआत इटावा से हुई है। नये वर्ष पर यह अभियान शुरू हुई है। नया वर्ष हमारे लिए संकल्प का वर्ष

है। हम आप सब की मदद से इटावा में संकल्प ले रहे हैं कि हर गर्भवती महिला स्वस्थ भी होगी और उसका होने वाला बच्चा भी स्वस्थ होगा।

आप हमें सलाह देंगे और बताएंगे कि और क्या-क्या चीजें मिलनी चाहिए क्योंकि गांव की महिलाएं ज्यादा जानती हैं। मेरी माँ भी घर में लड्डू बनाती थी, चक्की चलाती थी। मैंने अपनी माँ को सुबह पांच बजे उठकर चक्की चलाते हुए देखा है, कपड़े धोते हुए देखा है। वह चक्की चलाकर उस मोटे अनाज से लड्डू बनाती थी और अपनी बहुओं को खाने के लिए देती थी। सास भी बहू की चिंता करती थी। महिलाएं जहां शादी होती है, उस परिवार की भी चिंता करती हैं और जहां पैदा होती हैं, उस परिवार की भी चिंता करती हैं। महिलाएं पिहर की भी चिंता करती हैं और सुसराल की भी चिंता करती हैं और दो-दो परिवारों को संभालती हैं। सामंजस्य से और समानता से दोनों परिवारों को संभालती हैं। यह भारत की संस्कृति है। माँ में संवेदना होती है और वह लोगों की दुख और पीड़ा को समझती है। वह स्वयं भूखी रह जाती है लेकिन परिवार की चिंता करती है इसलिए हम माँ को पोषित करेंगे! यदि महिलाओं के लिए सेल्फ हेल्प ग्रुप बनाया जाए तो वह घर में रहकर दो, तीन, चार सौ रुपये कमा कर अपने पैरों पर भी खड़ी हो सकती हैं और परिवार को भी पाल सकती हैं। इसके लिए आने वाले समय में आप चर्चा करें कि आप क्या काम कर सकते हैं, कैसा काम कर सकते हैं। सामान की मार्केटिंग करने का काम हम बड़ी कम्पनी को कह सकते हैं। कच्चा माल हम देंगे ताकि आप उसे बनाकर दें क्योंकि आपके पास इतना धन नहीं होता है कि आप कच्चा माल खरीदो और उसे बनाकर बेचो। पहले हम एक योजना शुरू करते हैं कि सौ सिलाई मशीनें यहां पर चिह्नित करके जो महिलाएं काम करना चाहती हैं, उनके घर पर देते हैं। हम कुछ कोचिंग वालों से कहेंगे कि आप कच्चा कपड़ा काट कर उन महिलाओं को दो, उसे महिलाएं सिल कर देंगी। उसकी ट्रेस का पैसा आप दे देना ताकि उस महिला को सौ-डेढ़ सौ रुपये बच जाएं। ऐसे ही एग्रीकल्चर के अंदर भी जो-जो ऐसे प्रोडक्ट्स हैं,

जिन्हें इटावा में वेल्यू एडिशन करके हम उसकी पैकिंग करवा कर बाजार में बेच सकें, वह काम भी करेंगे।

सबसे पहले तो हमारी माताएं स्वस्थ रहें, उसके आना वाला बच्चा भी स्वस्थ रहे। आपके पास टेलीफोन नम्बर्स होंगे। तीन-तीन, चार-चार पंचायतों में महिला डाक्टर कुछ-कुछ समय बाद आपकी चैकिंग करेंगी। यदि किसी प्रकार की कमजोरी है, तो उसके लिए कौन-कौन सी दवाओं की जरूरत है, वह जांच करके आपको दवाई देने का काम करेंगी। आपकी हर पंचायत और गांव के अंदर एम्बुलेंस की सुविधा होगी। उसमें हर जांच की सुविधा होगी। यदि कोई कमी नजर आएगी तो डाक्टर आपको इटावा के लिए रेफर करेगा। यदि इटावा के बाद भी कहीं और दिखाने की आवश्यकता हो तो कोटा में दिखाओ। हमारे आफिस के नम्बर, डाक्टर के नम्बर आपके पास रहेंगे। आप फोन कर सकते हैं कि ज्यादा प्रॉब्लम है, हमें बड़े डाक्टर को दिखाना है तो निशुल्क आपको डाक्टर और दवाई की सुविधा प्राप्त होगी। कोटा में पचास महिला डाक्टर निशुल्क रूप से सेवाएं कर रही हैं। वे डाक्टर आपके गांव-गांव में भी आएंगी और दो-तीन महीने में जांच करेंगी ताकि हम हर महिला को स्वस्थ रख सकें। हम आज इसलिए आपके बीच में आए हैं। मुझे आशा है कि आप सभी महिलाएं आपस में मिलकर गांव-गांव में जाएं और हर गांव में दो-तीन महिलाएं ऐसी हों जो दादी माँ की तरह सबकी चिंता करें कि किसी को कोई तकलीफ या परेशानी न हो। सभी के पास हमारे नम्बर हैं और यदि किसी को कोई तकलीफ आए तो हमें फोन करें। इस तरह से गांव में यदि पढ़ने वाली लड़कियां हैं, गांव में रहती हैं तो वे ऐसी योजना बनाएं कि हमें गांव के लोगों की सेवा करनी है। सब मिलकर काम करेंगे तब हम काम में सफल हो पाएंगे।

यदि हमें जानकारी नहीं मिलेगी तो हम काम कैसे करेंगे? जानकारी देने के लिए तीन-तीन, चार-चार महिलाएं गांव में होनी चाहिए जो सामाजिक कार्यकर्ता बनें। जो महिलाओं के स्वास्थ्य की चिंता करें। यदि बच्चा पैदा हो गया है और उसमें कुछ कमी है तो उसकी तुरंत जांच कराएं। यदि महिला या बच्चे को गंभीर बीमारी है तो हमें बताएं, हम उनका इलाज कराएंगे। हमारी कोशिश होनी चाहिए कि इटावा के अंदर हर महिला और शिशु सौ प्रतिशत स्वस्थ होने चाहिए। हर माँ स्वस्थ रहे, हर बच्चा स्वस्थ रहे, यह हमारा संकल्प होना चाहिए।

मुझे विश्वास है कि गांव में यदि पांच-पांच महिलाएं भी आप हमें दे देंगे, तो उन पांच महिलाओं के भरोसे हम हर गांव में महिलाओं को स्वस्थ भी रखेंगे और उस गांव के अंदर रहने वाली हर महिला को दो सौ, ढाई सौ, तीन सौ रुपये का काम भी दिला देंगे, लेकिन हमें हर गांव में पांच-पांच महिलाएं तैयार करनी हैं। जो सेल्फ हेल्प ग्रुप होंगे, उन्हें ऋण दिलाने का काम हम करेंगे। सभी को ऋण मिलना चाहिए ताकि रोजगार का सृजन हो। देश में ऐसे बहुत सेल्फ हेल्प ग्रुप्स हैं, जिन्होंने छोटे से छोटा काम शुरू करके आज लिज्जत पापड़ जैसा बड़ा एम्पायर खड़ा करने का काम किया है। मैं आपसे हाथ जोड़ कर निवेदन करता हूं कि आप सभी महिलाएं स्वस्थ रहें, इसके लिए आप सभी को मिलकर काम करना है। हम सभी आपके साथ हैं और आपकी सेवा करने को तैयार हैं लेकिन मेरी माँ, मेरी बहन स्वस्थ रहे और बच्चा स्वस्थ रहे, यही मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं और इस काम के लिए आप सहयोग करेंगे।
